पाठ-11

प्राण जाएँ पर वृक्ष न जाए

आइए सीखें: ● पर्यावरण रक्षा के प्रति जागरूकता ● वृक्ष रक्षा और जीवरक्षा की प्रेरणा ● संधि एवं समास का ज्ञान ● कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण ● विलोम शब्दों का ज्ञान।

*(**पाठ-परिचय :** संकलित गद्य में पर्यावरण की रक्षा का महत्व समझाया गया है। पर्यावरण की शुद्धता को बनाए रखने में पेड़ों का बड़ा महत्व है। पेड़ों को अपने जैसा ही मानने के कारण उनको बचाने के लिए अपनी जान दे देने की एक सच्ची कहानी यहाँ दी गई है। इस पाठ का उद्देश्य छात्रों में पर्यावरण-रक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करना है।)*

इन दिनों वृक्षों की घटती संख्या और बिगड़ते पर्यावरण को देखकर समूचे विश्व में पर्यावरण की रक्षा की चिंता की जा रही है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाई जा रही है। वृक्षारोपण पर जोर दिया जा रहा है। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व जब चारों ओर वन-ही-वन थे, भगवान जम्भेश्वर द्वारा हरे-भरे वृक्षों की रक्षा करने की प्रेरणा देना सचमुच अद्भुत था। इन दिनों बिगड़ते प्रदूषण को देखते हुए यह प्रेरणा बहुत प्रासंगिक है।

आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व सन् 1485 में भगवान जम्भेश्वर द्वारा विश्नोई समाज की स्थापना की गई थी। उन्होंने प्रकृति से जुड़े 29 सरल नियमों की शिक्षा दी । इन 29 नियमों का पालन करने वाले विश्नोई कहलाए। इन्हीं नियमों में से वृक्षों की रक्षा और सभी जीवों पर दया करना एक मुख्य नियम था। इस नियम का पालन विश्नोइयों ने इस तरह किया, जो आज उनकी आन, बान, शान व पहचान बन गया है। विश्नोई समाज का इतिहास वृक्षों और वन्य जीवन की रक्षा की अनेक घटनाओं से भरा पड़ा है।

वृक्षों को कटने से बचाने के लिए शहीद अमृता देवी विश्नोई और 362 अन्य विश्नोइयों द्वारा अपने सिर कटवा लेने का प्रेरक प्रसंग विश्व के पर्यावरण रक्षा के इतिहास का एकमेव उदाहरण है।

भादों मास के शुक्ल पक्ष की दशमी। जोधपुर के राजा अभयसिंह को अपना महल बनवाने के लिए लकड़ी की आवश्यकता पड़ी। राजा की सेना जोधपुर के पास एक गाँव खेजड़ली में पेड़ काटने पहुँची। वह विश्नोइयों का गाँव था। उन्होंने कहा, ''हम परम्परा से वनों के रक्षक हैं। हमारे रहते पेड़ नहीं कट सकते।'' उनके विरोध की अनदेखी करते हुए सैनिकों ने कुल्हाड़ी

शिक्षण संकेत : ■ पेड़ों की महत्ता छात्रों को बताएँ। ■ पाठ में आए कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण छात्रों से करवाएँ। ■ मुहावरो का अर्थ स्पष्ट करें । ■ समास की जानकारी दें।

चलाना प्रारंभ कर दिया। तब एक महिला अमृतादेवी विश्नोई पेड़ से लिपट गई और यह कहती रही- ''सिर साँटे पर रूख रहे तो भी सस्तो जाण'' (सिर कट जाए पर पेड़ बचा रहे तो भी यह सस्ता सौदा है)। राजाज्ञा का पालन करना है, इस भाव से भरी सेना ने पेड़ से लिपटी अमृतादेवी को ही काट डाला। आज्ञापालन विवेक के साथ करना है, इस बात का सैनिकों ने ध्यान नहीं रखा। इस बलिदान को देखकर सैकड़ो विश्नोई नर-नारी आगे आकर पेड़ों की रक्षा करने के लिए पेड़ों से लिपट गए। पेड़ों को कटने से बचाने के लिए सभी अपना सिर कटवाने को तैयार थे। पेड़ों की रक्षा के लिए आत्म बलिदान के लिए तत्पर विश्नोई नर-नारी ''सिर साँटे पर रूख रहे'' का नारा लगा रहे थे। सेना कुल्हाड़ी चलाती रही। एक-एक करके 362 विश्नोई नर-नारी स्वयं कट गए, परन्तु उन्होंने एक भी पेड़ नहीं कटने दिया।

जब राजा अभयसिंह को इस भीषण घटना का समाचार मिला तो वे बहुत दुखी हुए। स्वयं खेजड़ली ग्राम आए तथा अपनी सेना द्वारा किए गए नरसंहार के लिए क्षमा माँगी। ताम्रपत्र पर राजाज्ञा जारी की गई कि विश्नोई गाँवो में कोई पेड़ नहीं काटेगा। यदि काटेगा तो राजदण्ड का भागी होगा।

इसी तरह हिरणों की रक्षा में भी शिकारियों से मुकाबला करते अनेक विश्नोई शहीद हुए हैं। सन् 1996 अक्टूबर में राजस्थान के चुरू जिले में हिरणों की रक्षा करते हुए शहीद हुए श्री

निहालचन्द विश्नोई को भारत सरकार ने मरणोपरान्त शौर्यचक्र से सम्मानित किया है। स्व. निहालचंद विश्नोई एकमात्र गैर सैनिक हैं जिन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ है। मूक हिरण भी अपने रक्षकों को अच्छी तरह पहचानते हैं। विश्नोइयों के आगे-पीछे हिरण बकरियों की तरह घूमते हैं।

स्मरण रहे, हमें पेड़ों की जरूरत है, पेड़ों को हमारी जरूरत नहीं है। वातावरण में दिन-प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण से बचने के लिए हमें पेड़ों की रक्षा करनी ही होगी तथा और पेड़ लगाने होंगे। वृक्षरक्षा तथा जीवरक्षा का संकल्प एवं नया वृक्षारोपण कार्य ही वृक्षों की रक्षा में शहीद हुए विश्नोइयों को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शहीद अमृता देवी एवं 362 शहीदों के बलिदान की स्मृति में भारत शासन प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पर्यावरण पुरस्कार देता है। मध्यप्रदेश का वन विभाग प्रतिवर्ष वन-संवर्द्धन एवं वन रक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली ग्राम पंचायत अथवा संस्था को शहीद अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार और एक लाख रुपया नकद प्रदान करता है। म.प्र. सरकार शहीद अमृता देवी विश्नोई के नाम पर दो व्यक्तिगत पुरस्कार भी देती है। पचास हजार रुपया नगद और प्रशस्ति-पत्र पुरस्कार के रूप में, वन संवर्द्धन और वन्य प्राणियों की रक्षा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति को प्रतिवर्ष दिए जाते हैं।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

रक्षक	--------------	शहीद	--------------
ताम्रपत्र	--------------	प्रशस्ति	--------------

श्रद्धांजलि -------------- उत्कृष्ट --------------
संवर्द्धन --------------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए -

क. सैनिकों की कुल्हाड़ी का सबसे पहले विरोध किसने किया?

ख. अमृता देवी का नारा क्या था?

ग. विश्नोई समाज की स्थापना किसने की थी?

घ. हरिणों की रक्षा में कौन शहीद हुआ था?

ङ: राजा ने पेड़ काटने की क्या सजा घोषित की?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क. जोधपुर के राजा अभयसिंह को लकड़ी की आवश्यकता क्यों पड़ी? इसके लिए उन्होंने क्या किया?

ख. अमृता देवी वृक्षों की रक्षा और किस प्रकार से कर सकती थी? सोचकर लिखिए।

ग. अमृता देवी का नारा इस पाठ में किस तरह सार्थक हुआ?

घ. राजा अभयसिंह ने पश्चाताप किस प्रकार किया?

ङ अमृता देवी व अन्य शहीदों से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

प्रश्न 4. सही विकल्प चुनिए -

क विश्नोई समाज के नियम मुख्यत: आधारित थे।

(अ) प्रकृति के पोषण पर (आ) समाज की परम्परा पर

(इ) धर्म की मान्यता पर (ई) जीव-जन्तुओं के प्रति करुणा पर

(उ) इन सब के सम्मिलित प्रभाव वाली प्रथा पर

ख म.प्र. सरकार किसके नाम पर दो व्यक्तिगत पुरस्कार देती है ?

(अ) विश्नोई समाज (आ) अमृता देवी विश्नोई

(इ) निहालचन्द विश्नोई (ई) शहीदों

ग वृक्ष का पर्यायवाची शब्द है।

(अ) कानन (आ) तरु

(इ) गिरि (ई) चक्षु

घ अमृता देवी के साथ शहीद विश्नोइयों की संख्या थी।

(अ) 362 (आ) 365

(इ) 363 (ई) 364

ङ श्री निहालचन्द विश्नोई को भारत सरकार ने सम्मानित किया।

(अ) पद्मश्री से (आ) शौर्य चक्र से

(इ) परमवीर चक्र से (ई) वीर चक्र से

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द उनके नीचे बनी वर्ग पहेली में दिए गए हैं। आप उन्हें खोजकर लिखिए -

वाचाल, राजा, अपमानित, भक्षक, हर्ष, क्षम्य, हिंसा, हित, दुखी, विरोध

स	म्	मा	नि	त
म	अ	हि	त	शो
र्थ	हिं	र	क्ष	क
न	सा	सु	खी	रं
अ	क्ष	म्य	मू	क

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध उच्चारण कीजिए और उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

श्रद्धांजलि, संकल्प, शौर्यचक्र, प्रासंगिक, जम्भेश्वर

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों की संधि-विच्छेद कीजिए और संधि का प्रकार लिखिए -

वृक्षारोपण, एकमेव, राजाज्ञा, मरणोपरान्त, वातावरण।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह कीजिए -

ताम्रपत्र, राजदण्ड, प्रतिवर्ष, ग्रामपंचायत, शौर्यचक्र

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग पहचान कर लिखिए-

गैरसैनिक, पर्यावरण, सम्मान, उल्लेख, प्रशस्ति, प्रदूषण, संवद्र्धन।

प्रश्न 6 निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य और विधेय छाँटकर लिखिए -

(क) भगवान जम्भेश्वर द्वारा हरे-भरे वृक्षों को बनाए रखने की प्रेरणा दी गई थी।

(ख) विश्नोई समाज ने वनों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

(ग) भारत शासन प्रतिवर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार देता है।

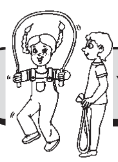

योग्यता विस्तार

1. वृक्षों से लाभ विषय पर निबंध लिखिए ।
2. वन्य प्राणी संरक्षण दिवस पर परिचर्चा कीजिए।
3. वन महोत्सव के अवसर पर अपने विद्यालय में पौधे लगाइए और उनकी देखभाल कीजिए।
4. यदि आपको लकड़ियों की आवश्यकता पड़ती तो आप क्या करते ? चर्चा कीजिए।

यह भी जानिए -

चिपको आन्दोलन

वृक्ष सदैव से मनुष्य को जीवन प्रदान करता आया है, अत: आधुनिक युग में वृक्षों की अवैध कटाई एक भीषण समस्या के रूप में उभरकर सामने आई है, इस समस्या का आंशिक समाधान उत्तराखण्ड के गढ़वाल सीमा क्षेत्र में वृक्षों की अवैध कटाई को लेकर वहाँ निवास करने वाली एक सामान्य महिला गौरादेवी के आत्मविश्वास ने ऐसा प्रयास किया, जिससे वृक्षों की अवैध कटाई रोकी जा सकी। गौरादेवी और उसकी कुछ सहयोगी महिलाएँ वृक्षों की कटाई के समय ग्रामीण महिलाओं और बच्चों को साथ लेकर वहाँ पहुँच जाती और यह महिलाएँ और बच्चे वृक्षों के चारों और चिपक जाते अत: इस आन्दोलन का नाम ''चिपको आन्दोलन'' पड़ गया। बाद में सुंदरलाल बहुगुणा के अथक प्रयास करने के बाद इस जन-आन्दोलन से हजारों वृक्षों को कटने से बचाया जा सका तथा सरकार को जन-भावनाओं के अनुरूप निर्णय लेना पड़ा।